ॐ

~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम   विषय-   हिन्दी

दिनांक-09-02-2021   कलिंग विजय (एकांकी)

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

कलिंग विजय (एकांकी)

गायिका : सम्राट इन रक्त की नदियों के पीछे, इस हाहाकार और अत्याचार के उस पार, मैं इस नयी दुनिया का स्वप्न देखती हूँ, कलिंग की उजड़ी हुई धरती में एक नयी सृष्टि ।.............आप भी देखिए सम्राट उस ओर चिंताओं के परे, आहों के ऊपर देखिए न !

अशोक : लेकिन, देवी ! मेरी लालसा, मेरी अतृप्त आकांक्षा ! मैं न देख सकूँगा ....नहीं।
~~~~~~~~

गायिका : क्यों नहीं सम्राट ? आपकी लालसा, आपके अरमान, आपकी शक्ति, आपका प्यार-सब आज से उस अनोखे चिता का निर्माण करेंगे?.......... फिर कोशिश कीजिए, क्या आप उस स्वप्न को नहीं देख पाते ?

अशोक : मैं कोशिश करूँगा, देवी !

गायिका : मैं देख रही हूँ, सम्राट उज्ज्वल प्रभात, भगवान बुद्ध की करुणामयी किरणों से आलोकित प्रभात............ । देख रही हूँ भारत-भूमि के कोने-कोने में उनके पावन संदेश का प्रचार, आर्यावर्त के हर एक नगर में शिला-लेख और स्तंभ, और.......... और मैं देख रही हूँ सदियों बाद, संसार के हृदय मंदिर में अशोक की प्रतिमा.......सच्चे धर्म के पुजारी की प्रतिमा....... (रुककर) मुझे निराश न करेंगे सम्राट ?

अशोक : (विस्मित) देख रहा हूँ, देवी-मैं भी देख रहा हूँ, मेरी आत्मा धुल रही है, मेरा कलंक धुल रहा है। भिक्षुणी ....भिक्षुणी !

कैसा उज्जवल प्रभात है यह ! -..........

(निस्तब्धता)

अशोक : लेकिन, लेकिन..... तुमने मुझे नया मार्ग दिखाया-कैसे इस अहसान को चुकाऊँगा ?

गायिका : विश्व सेवा के द्वारा।

अशोक : अपनी सेवा का भी अवसर दो, देवी !

गायिका : मेरी सेवा ? भिक्षुणी की सेवा ?(मानो याद आयी हो) हाँ, एक काम है

अशोक : (आतुर होकर) कहो !

गायिका : आप मेरे लिए एक भाई ला दीजिए ! ला सकेंगे ?

अशोक : (विस्मित) भाई ?

गायिका : हाँ ! भाई ....मेरा भी एक भाई था परंतु कल वह आपके कलिंग युद्ध में मारा गया।

अशोक : मानो बिजली छू गयी हो) सच बताओ, तुम कौन हो ?

गायिका : थी। ..... कलिंग की राजकुमारी । अब एक भिक्षुणी हूँ ।

अशोक : (गिर पड़ता है घुटनों पर अपने हाथों से मुँह ढंकता हुआ) कलिंग की राजकुमारी !............(रुंधे गले से) ओह ! ....मैं तुम्हारे भाई का हत्यारा हूँ ?....... हत्यारा !

गायिका : नहीं सम्राट ! आप ही मेरे भाई हैं !(रुंधे गले से) (अशोक खड़ा होता है) मेरे भाई !

अशोक : मेरी बहन !

गायिका : कहो, गाकर कहो, ज़ोर से कहो-बुद्धं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणंगच्छामि!!

अशोक : बुद्धं शरणंगच्छामि, संघ शरणंगच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि!!

(पर्दा गिरता है)।

-जगदीश चंद्र माथुर

धन्यवाद

कुमारी पिंकी 'कुसुम'

🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲